Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
July-December 2023 4(2), 4369–4372

CAUSES OF HOMELESSNESS

आवास विहीनता के कारण

Manoj Singh [1], Pradeep Kumar [2]

[1] Research Director, Department of Geography, School of Education and Humanities, IFTM University, Moradabad, India
[2] Research Scholar, Department of Geography, School of Education and Humanities, IFTM University, Moradabad, India

DOI
10.29121/shodhkosh.v4.i2.2023.5079

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2023 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

ABSTRACT

English: When a section of the population lives in a homeless situation, an attempt has been made in the research study to know the actions of these people due to which a person and family become homeless. Due to illiteracy, ignorance, poverty, lack of resources, inefficiency, a person does not get the means to earn a living i.e. respectable employment. Due to physical disability and consumption of intoxicants, the person continuously moves towards a negative situation in life. The lowest condition of such a life can be called homelessness.

Hindi: जनसंख्या का एक वर्ग जब आवास विहीन स्थिति में जीवन यापन करता है ऐसे में आवाज में इन व्यक्तियों के उन कर्म को जानने की कोशिश शोध अध्ययन में की गई है जिनके कारण व्यक्ति तथा परिवार आवास विहीनस्थिति में आ जाते हैं अशिक्षा, अज्ञानता ,गरीबी, संसाधनों का अभाव ,अकुशलता के कारण एक व्यक्ति को आई का जीवन यापन करने योग्य साधन अर्थात सम्मानजनक रोजगार प्राप्त नहीं होता शारीरिक अक्षमता तथा नशा पर नशीली वस्तुओं के सेवन के कारण व्यक्ति जीवन में निरंतर नकारात्मक स्थिति की ओर अग्रसर होता जाता है इस तरह के जीवन की निम्नतम स्थिति को आवास विहीनता कहा जा सकता है।

Keywords: Housing, Homelessness, Slum, Rehabilitation, आवास, आवास विहीनता, झुग्गी-बस्ती, पुनर्वास

1. प्रस्तावना

आवास विहीन व्यक्तियों को कई प्रकार की शारीरिक तथा मानसिक क्षमताओं का सामना करना पड़ता है, जैसे ट्यूबरक्लोसिस, अस्थमा, शिजोफ्रेनिया, ब्रोंकाइटिस, एचआयवी इनफेक्शन। अधिकांश शोधार्थी इस बात से सहमत हुए हैं कि मानसिक तथा शारीरिक अक्षमताओं में एक गहरा संबंध होता है। आवास विहीनता के साथ शरीर तथा मानसिक अक्षमताएं व्यक्ति के व्यवहार को प्रभावित करती हैं। शारीरिक तथा मानसिक रूप से अक्षम व्यक्तियों का वार्तालाप सामान्य नहीं होता। इसके कारण आवास विहीन व्यक्ति जो शारीरिक तथा मानसिक क्षमता से जूझ रहे होते हैं ऐसे व्यक्ति अपने जीवन के संसाधन जुटाना में सक्षम नहीं हो पाते हैं। दैनिक संसाधनों का अभाव तथा आवास मिलने की स्थिति व्यक्ति के शारीरिक तथा मानसिक क्षमता की स्थिति को और अधिक तीव्रता से बढ़ा देती है। इस प्रकार आवास विहीनता तथा शारीरिक तथा मानसिक क्षमता एक दूसरे से घनिष्ठ रूप से जुड़े होते हैं।

शराब तथा अन्य नशीली वस्तुओं के सेवन के कारण भी आवास विहीन व्यक्तियों में मानसिक तथा शारीरिक अक्षमता का विकास हो जाता है शारीरिक तथा मानसिक क्षमता के कारण आवास विहीन व्यक्ति अपने आसपास के लोगों के साथ सामान्य व्यवहार नहीं करता ऐसी स्थिति में एक आवास विहीन व्यक्ति का व्यवहार अपने आसपास के लोगों से आक्रामक हो जाता है कई बार मानसिक क्षमता तथा मानसिक विकारों के कारण एक आवास विहीन व्यक्ति अपने आसपास के लोगों को हिंसा में हानि भी पहुंचा देता है जिसमें उसका व्यक्तिगत रूप से सामान्य व्यवहार कार्य नहीं करता बल्कि उसकी मानसिक विकृति के कारण ऐसा हो जाता है।

हम बचपन में जन्म से माता-पिता से इनको संवेदनात्मक लगाव प्राप्त नहीं होता है आवास विहीन परिवारों में बच्चों की देखरेख उन स्थितियों में नहीं होती जिस प्रकार से सामान्य परिवारों में बच्चों का पालन पोषण किया जाता है। बचपन से ही कठिनाइयों तथा पारस्परिक स्नेह और लगाव के अभाव में उनके व्यवहार में संवेदना तथा भावनात्मक विचारों का अभाव होता है। ऐसी स्थिति में इनका व्यवहार आक्रामक तथा असामान्य बन जाता है। ऐसी स्थिति में आवास विहीन व्यक्ति जीवन की सामान्य समस्याओं के जाल को तोड़ने में अपने आप को समर्थ तथा असहाय पाते हैं शारीरिक तथा मानसिक क्षमता तथा अपगंता के कारण कई प्रकार की बीमारियां इनको घेरने लगती हैं जैसे शिजोफ्रेनिया मेंटल डिसऑर्डर डिप्रेशन मेंटल स्ट्रेस आदि शारीरिक अक्षमता भी आवास विहीन व्यक्तियों के जीवन का एक नकारात्मक पक्ष होता है। अधिकांश आवास विहीन व्यक्ति शारीरिक रूप से असक्षम होते हैं शारीरिक अक्षमता का संबंध कुपोषण चिकित्सा के साधनों का अभाव तथा जानकारी का अभाव शुद्ध जल खान-पान का अभाव आवश्यक पोषक तत्वों की कमी के कारण होता है। गरीबी तथा अभाव के कारण व्यक्ति अपने पोषण की आवश्यकताओं की पूर्ति करने में असमर्थ होता है ऐसी स्थिति में जब एक आवास विहीन व्यक्ति ना तो मानसिक रूप से स्वस्थ होता है और नहीं शारीरिक रूप से स्वस्थ होता है शारीरिक तथा मानसिक अक्षमता के कारण व्यक्ति को आय के अच्छे साधन प्राप्त नहीं हो पाते हैं रोजगार प्रदान करने वाले व्यक्ति तथा प्रतिष्ठान रोजगार प्रदान करने से पहले व्यक्ति की शारीरिक मानसिक सामाजिक दशाओं की जानकारी प्राप्त करते हैं यदि व्यक्ति शारीरिक तथा मानसिक रूप से सक्षम नहीं होता है ऐसी स्थिति में उसे व्यक्ति को जीवन के संचालन के लिए आवश्यक रोजगार की प्राप्ति भी नहीं हो पाती है। क्योंकि शारीरिक तथा मानसिक रूप से अक्षम व्यक्ति रोजगार प्रदान करने वाले व्यक्ति तथा प्रतिष्ठानों के आवश्यक मानकों पर अपने आप को साबित नहीं कर पाते हैं।

एक आवास विहीन व्यक्ति जब शारीरिक तथा मानसिक रूप से अक्षम तथा अपंग होता है तब उसकी परेशानियां कई गुना और अधिक बढ़ जाती हैं। समाज में अपने लिए एक सूक्ष्म स्थान बना पाना भी उसके लिए बहुत मुश्किल होता है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति का पूरा जीवन कष्ट से भरा हुआ होता है ऐसा व्यक्ति अपने आप को समाज की मुख्य धारा से अलग-थलग पाता है। शारीरिक तथा मानसिक अपंगता आवास विहीन व्यक्तियों में पाया जाने वाला एक सामान्य लक्षण होता है इसके साथ ही साथ वह व्यक्तिगत रूप से स्वयं भी इन स्थितियों के लिए जिम्मेदार होता है। समाज, सरकार तथा व्यक्ति के स्वयं के लिए भी इस दिशा में बहुत कार्य किया जा सकता है

विश्व आर्थिक मंच की 2021 की रिपोर्ट के अनुसार विश्व में 150 मिलियन आवास विहीन जनसंख्या निवास करती है वहीं दूसरी और भारत की 2011 की जनसंख्या जनगणना के अनुसार भारत में 1.77 मिलियन होमलेस या आवास विहीन व्यक्ति निवास करते हैं। गरीबी आवास विहीनता, शारीरिक तथा मानसिक अक्षमता का दुष्चक्र व्यक्ति को आवास विहीनता की स्थिति में बनाए रखता है। भारत में सार्वजनिक स्थानों पर यह अक्सर देखने को मिलता है कि एक आवास विहीन व्यक्ति जिसमें महिला या पुरुष कोई भी हो सकता है या तो वह सामान्य लोगों पर हंस रहा होता है या फिर आक्रामकता से उन पर गुस्सा करके चिल्ला रहा होता है। यदि एक आवास विहीन व्यक्ति मानसिक तथा शारीरिक रूप से अक्षम तथा अपंग होता है तब उसके लिए जीवन को आगे बढ़ाना एक बहुत मुश्किल समस्या बन कर आती है। मानसिक तथा शारीरिक रूप से अपंग एक व्यक्ति जिसका नाम सतीश है यह व्यक्ति मेरठ के नौचंदी एरिया में घूमता रहता है वह या तो खुद से ही कुछ बड़बड़ाता रहता है या बच्चों के ऊपर हंसता है या कभी बच्चों के पीछे कुछ पत्थर उठाकर भाग लेता है इसके कपड़े अस्त व्यस्त रहते हैं इसको अपनी साफ सफाई का कोई ध्यान नहीं होता है भूख लगने के समय वह कुछ भी मांग कर खा लेता है कूड़ेदान से कई बार दुकानों के बाहर बचा हुआ भोजन उठाकर खा लेता है

आय भोजन आवास तथा दैनिक जीवन की समस्याओं से घिरा हुआ आवास विहीन व्यक्ति जब मानसिक तथा शारीरिक रूप से अपंग तथा विकृत हो जाता है तब उसकी जीवन को बेहतर करने की इच्छाएं भी मर जाती है और वह संसाधनों को जुटाकर अपना जीवन सामान्य बनाने में पूरी तरह से नाकाम हो जाता है। मानसिक रूप से अपंग एक आवास विहीन व्यक्ति मुश्किल से ही सामान्य जीवन में पुनः वापस लौट पाता है सामान्य व्यक्ति भी उनको दुर्भावना की नजरों से देखते हैं। समाज में उनकी मूल समस्याओं का अध्ययन कर उनका उपचार प्रदान करने के लिए व्यक्ति समाज तथा प्रशासन अपना ध्यान इस और दे सकता है। एक आवास विहीन व्यक्ति अचानक तथा आकस्मिक रूप से शारीरिक तथा मानसिक अपंग नहीं हो जाता है इसके पीछे एक लंबा समय कल होता है जब एक आवास विहीन व्यक्ति बचपन से ही उपेक्षा दुर्भावना का शिकार होता है गरीबी तथा बदहाली का जीवन व्यतीत करता है तो समय के साथ-साथ उसमें हीन भावना और नकारात्मकता की भावना उत्पन्न होती है। यह सब उसको मेंटल डिसऑर्डर की और ले जाता है दैनिक जीवन की दुर्भावना तथा प्रताड़ना की घटनाएं उसे मानसिक अपंगता की ओर धकेलती हैं। वह बहुत सी कोशिशें के बाद भी जीवन के दुष्चक्र को तोड़ने में अपने आप को नाकामयाब पाता है। क्योंकि समाज व्यक्ति तथा प्रशासन का सहयोग और उसके खुद की इच्छा से ही उसका जीवन सामान्य हो सकता है।

आवास विहीनता का एक बड़ा कारण नशे की लत होती है जब व्यक्ति कई प्रकार की ड्रग्स तथा नशीली वस्तुओं का सेवन करने लगता है तब समय के साथ-साथ वह इसका आदी हो जाता है। नशीली वस्तुओं के सेवन का आदी होने पर व्यक्ति के संबंध समाज के साथ ठीक नहीं रहते हैं फलतः व्यक्ति का समाज के साथ विच्छेद होना आरंभ हो जाता है नशीली वस्तुओं का आदी होने पर व्यक्ति की आय स्रोतों पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है यदि एक व्यक्ति रोजगार में होता है और साथ ही साथ में नशीली वस्तुओं के सेवन का भी आदि हो जाता है ऐसी स्थिति में रोजगार तथा नशीली वस्तुओं के सेवन की आदतों को साथ-साथ चलना मुश्किल कार्य होता है इसलिए व्यक्ति को रोजगार से हाथ धोना पड़ता है। रोजगार प्रदान करने वाले सुनिश्चित करते हैं कि जिस व्यक्ति को कार्य करने की जिम्मेदारी दे रहे हैं वह मानसिक तथा शारीरिक रूप से स्वस्थ होना चाहिए। तभी व्यक्ति की विश्वसनीयता बनी रहती है नशीली वस्तुओं का आदी होने के कारण समाज तथा स्टाफ में कार्य स्थलों पर व्यक्ति की विश्वसनीयता समाप्त हो जाती है।

आवास विहीन व्यक्तियों के अध्ययन में पाया गया है कि नशीले पदार्थ तथा मादक वस्तुओं के सेवन के अनुपात में पुरुषों की संख्या में महिलाओं से काफी अधिक है। शराब कोकीन, अफीम सिगरेट आदि का सेवन महिलाओं के द्वारा ना के बराबर किया जाता है। अधिकांश आवास विहीन महिलाएं

यदि किसी मादक वस्तु का सेवन करती भी हैं तो इसमें गुटके को लिया जा सकता है। आवास विहीन महिलाओं में देखा गया है कि उन कुछ महिलाओं के द्वारा गुटके का सेवन किया जाता है। आवास विहीन व्यक्तियों के द्वारा नशीली वस्तुओं के प्रभाव के कई नकारात्मक प्रभाव उनके जीवन पर पढ़ते हैं। जैसे आवाज विहीन व्यक्ति अपनी मेहनत मजदूरी की कमाई नशीली वस्तु तथा मादक पदार्थों के मादक पदार्थों के खरीदने में व्यर्थ कर देते हैं। वह यह नहीं सोचते कि यह धन उनके द्वारा बड़ी मेहनत से कमाया गया है नशीली तथा मादक वस्तुओं के सेवन को खरीदने का प्रभाव यह भी होता है कि उनके द्वारा फल तथा सब्जियां खरीदने के लिए धन शेष नहीं बचता है। नशीली तथा मादक वस्तुओं को खरीदने के उपरांत उनके पास इतना धन शेष नहीं बसता है कि वह अपने स्वास्थ्य के लिए अच्छी खाद्य वस्तुओं को खरीद सकें।

आवास विहीन व्यक्तियों के जीवन की मूल समस्या उनका गरीब होना होता है आवास विहीन व्यक्तियों का जीवन गरीबी से आरंभ होकर गरीबी पर ही समाप्त हो जाता है। आवास विहीन व्यक्तियों के जीवन में सामाजिक तथा पारिवारिक हिंसा भी मूल रूप से गरीबी से ही जुड़ी होती है। परिवार का गरीब होने के कारण इन व्यक्तियों को आसानी से सामाजिक शोषण का शिकार बनाया जाता है। कई बार इनको पैसे उधार देकर लोग इनका नाजायज फायदा उठाते हैं। ब्याज की दर उच्चतम रखी जाती है इसलिए गरीब परिवार रन के जाल में फंस जाते हैं। समय पर पैसे का भुगतान न होने के कारण समाज के लालची लोग इन गरीब परिवारों को कई प्रकार से हानि पहुंचाते हैं। सबसे पहले उच्चतम ब्याज की दर होने के कारण इन गरीब व्यक्तियों के द्वारा समय पर उधार पैसे का भुगतान नहीं किया जा सकता। समय गुजारने के साथ-साथ ब्याज के कारण पैसे की मात्रा बढ़ती जाती है ऐसी स्थिति में पैसा ब्याज पर देने वाले व्यक्ति इनका सामान तथा आवास पर कब्जा कर लेते हैं। और यह गरीब परिवार अपने जीवन में आवास विहीन श्रेणी में शामिल हो जाते हैं।

कई बार समाज के लोग गरीब परिवारों को पैसा उधार देकर उनके बच्चों से अनावश्यक श्रम का कार्य लेते हैं। महिलाओं का शारीरिक शोषण करने का प्रयास किया जाता है। पैसा उधार देकर उच्चतम ब्याज की दर रखने के बाद भी पैसा उधार देने वाले लोग अपना एहसान तथा दबाव इन परिवारों पर दिखाते हैं। इस तरह के कार्यों को गरीब परिवारों पर की जाने वाली सामाजिक हिंसा के रूप में देखा जाना चाहिए। यह गरीब परिवार समाज के लिए सॉफ्ट टारगेट होते हैं।

2011 की जनगणना के अनुसार भारत में 1.7 मिलियन जनसंख्या आवास विहीन है इनमें से लगभग वन मिलियन लोग शहरी केंद्रो पर आवास विहीन जीवन बिता रहे हैं। इस प्रकार कुल शहरी जनसंख्या का लगभग एक प्रतिशत जनसंख्या आवास विहीन है कुछ सिविल सोसाइटी संगठनों का आकलन है कि आवास विहीन जनसंख्या का एक्चुअल डाटा 1.7 मिलियन से कहीं ज्यादा है। ग्रामीण क्षेत्र से शहरी केंद्रो पर या नगरी केंद्रो पर प्रवास करने वाली जनसंख्या की मुख्य समस्या गरीबी होता है। गरीब जनसंख्या ही अच्छे रोजगार के अवसरों की तलाश में ग्रामीण केंद्रो से शहरी केंद्रो की तरफ प्रवास करती है। इस प्रवास करने वाली जनसंख्या के पास पूर्व में जमा की गई कोई पूंजी यह बैंकों में जमा की गई कोई पूंजी नहीं होती है।

भारतीय प्रवास के पैटर्न को यदि देखा जाए तो इसमें एक धारा ग्रामीण से शहर की ओर प्रवास करने वाली जनसंख्या की होती है। भारत में मजदूर वर्ग के लोग किसी एक स्थान से जुड़े हुए नहीं रहते हैं। इसमें महत्वपूर्ण यह है कि बिहार उत्तर प्रदेश उड़ीसा केरल हमेशा आउट माइग्रेशन के लिए जाने जाते हैं उच्च जनसंख्या घनत्व तथा जनसंख्या के अधिक दबाव के कारण यहां से बड़ी संख्या में लोग अन्य क्षेत्रों के लिए प्रवास करते हैं। इन राज्यों में जनसंख्या अधिक होने के कारण संसाधनों पर अधिक दबाव है इन राज्यों से जनसंख्या का प्रवास महाराष्ट्र गुजरात पंजाब मुंबई दिल्ली बेंगलुरु कोलकाता लुधियाना जालंधर मेरठ आदि स्थानों की ओर होता है। मेरठ शहर के अध्ययन में पाए गए आवास भी लोग उत्तर प्रदेश के कई शहरों से प्रभास करके यहां आय हैं। इसमें शाहजहांपुर हरदोई गोंडा बस्ती पीलीभीत बिहार मध्य प्रदेश इसके अतिरिक्त मेरठ शहर के आवास विहीन लोगों पर किए गए अध्ययन में यह देखने में आया कि भारत के कई राज्यों से जो लोग दिल्ली के लिए प्रवास करते हैं। लेकिन दिल्ली में उनको रोजगार आवास के लिए जब समस्याएं सामने आने लगते हैं तो उन्हें में से बहुत सारे लोग एनसीआर में उपस्थित होने के कारण मेरठ की ओर अग्रसर होते हैं।

2. निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि आवास विहीनता की स्थिति के पीछे कोई एक स्पष्ट कारण नहीं हो सकता है जब एक व्यक्ति या परिवार आवास विहीनता की स्थिति में आता है तो इसके पीछे कठिन समय की एक जटिल यात्रा होती है इसमें एक कारण ने होकर बहुत से कारण होते हैं एक व्यक्ति या परिवार जब आवास विहीनता में ही होता है तब इसमें परंपरागत रूप से चली आ रही गरीबी, अशिक्षा ,अज्ञानता, शारीरिक तथा मानसिक क्षमता का ना होना धन अर्जन के कार्यों को करने के लिए अपेक्षित कुशलता तथा प्रशिक्षण का अभाव आदि ऐसे कारण हैं जिनके कारण एक व्यक्ति या परिवार आवास विहीनता से हीनता की स्थिति में आ जाता है अतः आवास विहीनता के पीछे कोई एक कारण न होकर बहुत से कारक मिलकर व्यक्ति या परिवार को नकारात्मक रूप से घेर लेते हैं इन सभी कारकों के प्रत्यक्ष तथा प्रत्यक्ष रूप से जीवन में उपस्थित होने के कारण व्यक्ति तथा परिवार आवास विहीनता में नकारात्मक्ता का जीवन व्यतीत करने के लिए मजबूर होते हैं।

संदर्भ

"American Bar Association, Young Lawyers Division and Commission on Domestic Violence.
"Iowa Council on Homelessness, 2005 iowa Statewide Homeless Survey 20, 29 January 2006).

"Missouri Association for Social Welfare, Homelessness in Missouri: The Rising Tide May 2002).
"United States Conference of Mayors, Hunger and Homelessness Survey 64 (December 2005).
Ayano G. Testaw G. Shumel S. The prevalence of Schizophrenia and other psychotic disorders among homeless people: A systematic review and meta analysis. BMC Psychiatry, 2019:19:1-14.
Ayano G. Tsegay L, Abraha M, Yohannes K. Suicidal ideation and attempt among homeless people: A systematic review and meta-analysis. Psychiatric Quarterly, 2019: 90-829-842.
Baggett TP, Chang Y, Singer DE, Pomeala BC, Gaeta JM. O'Connell JJ. Rigotti NA. Tobacco, alcohol, and drug attributable deaths and their contribution to mortality disparities in a cohort of 31. homeless adults in s in Boston, American Journal of Public Health. 2015;105(6): 1189-1197.
Bainbridge J. Carrizales TJ. Global homelessness in a post-recession workd. Journal of Public Management & Social Policy, 2017:24(1):6,
Barnett P. Steare T. Dedat Z, Pilling S. McCrone P. Knapp M. Lloyd-Evans B Interventions to improve social circumstances of people with mental
Bassuk EL, Rubin L. Lauriat A. Is 11 homelessness a mental health problem American Journal of Psychiatry. 1984; 141(12):1546-1550
Browne. A. 1998. "Responding to the Needs of Low income and Homeless Women Who are Survivors of Family Violence."Journal of American Medical Women's Association. 53(2): 57-64
Callie Marie Rennison & Saran Welchans, Department of Justice, NCJ 178247, Intimete Partner Violence 4 (2000)
Cauce. A.M., Paradise, M., Ginzler, JA, Embry, L., Morgan, C.1, Lohr, Y., &Theofelis, 3. (2000) The characteristics and mental health of homeless adolesceme Age and gender differences Journal of Emotional and Behavioral Dourders, 8, 230-239
Center for Impact Research, Pathways to and from Homelessness: Women and Children in Chicago Shelters 3 January 2004)
Chamberlain, C. (1999), Counting the homeless: Implications for policy development. Canberra: Australian Bureau of Statistics.